Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 1, January - 2026

DOIs:10.2018/SS/202601009 --:-- Research Paper / Article / Review

भारत की विदेश नीति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का व्यवहारिक स्वरूप: एक समसामयिक अद्ययन (2014 के पश्चात)

[1]Dr. Usha Agrwal, [2]Jitendra Gavriya

[1] Research Supervisor, Head, Department of History, PM College of excellence, Mandsour, Samrat Vikramaditya University, Ujjain (M.P.), India

[2] Research Scholar, PM College of excellence, Mandsour, Samrat Vikramaditya University, Ujjain (M.P.), India

Email - jitendragavariya@gmail.com

सारांश : "वसुधैव कुटुम्बकम्" भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दर्शन है। जिसमें सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार माना गया है। इस दर्शन का मूल भाव यह है कि समस्त विश्व एक ही जीवन ऊर्जा से निर्मित है, इसलिए सभी मनुष्य परस्पर संबंधित हैं। अतः मानवता, सह-अस्तित्व और वैश्विक एकता की भावना इसमें विद्यमान है।

वर्तमान में भारत की इस प्राचीन अवधारणा को वैश्विक संदर्भ में मूर्त रूप प्राप्त हुआ है। विशेषतः 2014 के पश्चात भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्बकम् ने व्यावहारिक कूटनीतिक सिद्धांत के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। जैसे G20 की अध्यक्षता के दौरान "एक पृथ्वी, एक परिवार एक भविष्य" का सूत्र, अंतर्राष्ट्रीय सौर ठबंधन द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग, वैक्सीन मैत्री पहल के माध्यम से कोविड-19 टीकों की आपूर्ति तथा ऑपरेशन दोस्त जैसी मानवीय सहायता पहल, ये सभी कदम स्पष्टतः वसुधैव कुटुंबकम् के भारतीय विदेश नीति में व्यावहारिक पक्ष को दर्शाते हैं। इससे भारत को वैश्विक स्तर पर परस्पर सहयोग और मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण को और अधिक सशक्त बनाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

यह शोध पत्र गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारत ने किस प्रकार अपने सांस्कृतिक-दार्शनिक मूल्यों को समकालीन वैश्विक कूटनीति में सफलतापूर्वक रूपांतरित किया है।

मुख्य शब्द : वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय विदेश नीति, G20, वैक्सीन मैत्री, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा राहत।

1. परिचय : समकालीन विश्व वैश्वीकरण और परस्पर निर्भरता के युग में प्रवेश कर चुका है, जहाँ किसी एक राष्ट्र की समस्या केवल उसकी सीमाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसका प्रभाव समूचे वैश्विक तंत्र पर प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सामूहिक नीतिगत चिंतन और वैश्विक स्तर पर साझा उत्तरदायित्व की आवश्यकता स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई है।

यह दर्शन मनुष्य, प्रकृति और पर्यावरण के बीच संतुलित एवं सामंजस्यपूर्ण संबंध को प्रोत्साहन देता है। जिससे संकीर्ण राष्ट्रीय हितों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता और पृथ्वी के कल्याण हेतु कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। जिसमें सार्वभौमिक बंधुत्व, सहअस्तित्व, करुणा, पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना निहित है। भारत ने भी हमेशा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर निरंतर समावेशी विकास, सतत् प्रगति, वैश्विक साझेदारी और सर्वजनहिताय की नीति को बढ़ावा दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में वसुधैव कुटुम्बकम् केवल सांस्कृतिक आदर्श मात्र न रहकर समकालीन विश्व व्यवस्था में व्यवहारिक,एवं प्रासंगिक नीति-दर्शन के रूप में स्थापित हो रहा है।

2. अवधारणा का उद्गम : वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा भारतीय दार्शनिक परंपरा में अत्यंत प्राचीन मानी जाती है, जिसका मूल स्रोत महा उपनिषद् तथा वैदिक साहित्य में निहित है। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है। महाउपनिषद् (अध्याय 6, श्लोक 72) में यह उल्लेख मिलता है-

"अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

इस श्लोक का भावार्थ यह है कि "यह मेरा है और वह पराया है" इस प्रकार का भेद केवल संकीर्ण विचार वाले व्यक्तियों का होता है, जबकि उदार हृदय वाले लोगों के लिए संपूर्ण पृथ्वी ही परिवार के समान है। वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन उस सार्वभौम सत्य की स्थापना करता है कि समूचा जगत् एक परिवार के समान है, जो किसी एक दिव्य व्यवस्था के अधीन संचालित होता है। इसका सार यह है कि विश्व के सभी लोग समान लक्ष्यों में सहभागी हैं, और सहयोग, सम्मान, भ्रातृत्व एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माध्यम से एक-दूसरे के कल्याण में योगदान देते हैं। यह दृष्टिकोण भारतीय चिंतन की उस मूल भावना को प्रकट करता है जिसमें समस्त सृष्टि के प्रति करुणा, एकता और सह-अस्तित्व की भावना निहित है।

यह विचार मात्र एक नैतिक उपदेश नहीं है, बल्कि भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आचरण को दिशा देने वाला मूल मूल्य रहा है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान युग तक, इस सिद्धांत ने भारत की सभ्यता को सम्पूर्ण मानव समाज के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करने की प्रेरणा प्रदान की है। यह दर्शन मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे आध्यात्मिक और दार्शनिक संबंध को भी स्वीकार करता है।

इतिहास में भी इस विचार का व्यावहारिक स्वरूप दिखाई देता है। सम्राट अशोक की धम्म-नीति, जिसमें अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता के सिद्धांतों का प्रसार किया गया, "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना का प्रत्यक्ष उदाहरण है। मध्यकाल में संत कबीर, गुरु नानक और संत रैदास जैसे संतों ने अपने वचनों और शिक्षाओं के माध्यम से इसी सार्वभौमिक दृष्टि को आगे बढ़ाया। आधुनिक युग में महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत भी इस प्राचीन आदर्श के नव-रूप के रूप में देखे जा सकते हैं।

3. शोध उद्देश्य

1. भारतीय सांस्कृतिक विरासत में निहित 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा का गहन अध्ययन करते हुए, इसके दार्शनिक आधारों का विश्लेषण करना।

2. 2014 के पश्चात भारत की विदेश नीति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की वैचारिक व दार्शनिक भूमिका का विश्लेषण करना।

3.अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत द्वारा मानवता-केन्द्रित नीतियों को आगे बढ़ाने के व्यवहारिक प्रयासों का अध्ययन करना।

4. विकासशील एवं कम विकसित देशों के प्रति भारत की सहायता, मानवीय राहत, एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का मूल्यांकन करना।

5. वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में इस नीति की सीमाओं, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर समीक्षात्मक चर्चा करना।

4. शोध प्रविधि : इस शोध में गुणात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। वर्ष 2014 के बाद भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुंबकम् के व्यवहारिक स्वरूप को समझने के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया, जिनमें विदेश मंत्रालय की रिपोर्टें, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के वक्तव्य, थिंक टैंक की रिपोर्टें, शोध लेख और विश्वसनीय समाचार पोर्टल शामिल हैं। G20 और वैक्सीन मैत्री जैसी मानवीय पहलों को प्रमुख उदाहरण के रूप में लिया गया। शोध की सीमा यह है कि विदेश नीति से संबंधित कुछ सूचनाएँ सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं होतीं, इसलिए अध्ययन मुख्यतः उपलब्ध दस्तावेजों और प्रकाशित स्रोतों पर आधारित है।

संयुक्त राष्ट्र में वसुधैव कुटुम्बकम्- भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर,विशेषकर संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह स्पष्ट किया है कि भारत की विदेश नीति केवल राष्ट्र हित तक सीमित नहीं है, अपितु यह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री जी ने 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा संबोधन में वसुधैव कुटुम्बकम् को भारत के शाश्वत सांस्कृतिक मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार भारत का यह विश्वास है कि विश्व केवल सीमाओं का समूह नहीं, बल्कि एक परिवार है और जब यह परिवार सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध होगा, तभी सही अर्थ में विकास संभव होगा। उन्होंने बल दिया कि भारत का यह दर्शन विश्व शांति और परस्पर सम्मान पर आधारित एक समावेशी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की आवश्यकता को रेखांकित करता है। पुनः वर्ष 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 74वें अधिवेशन में प्रधानमंत्री जी कहा कि वैश्विक स्तर पर सतत विकास और साझा समृद्धि तभी संभव है जब राष्ट्र प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि सहयोग के आधार पर आगे बढ़ें जो वसुधैव कुटुम्बकम् की वास्तविक भावना है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस- भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का सर्वाधिक प्रतीकात्मक उदाहरण अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा है। प्रधानमंत्री जी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण के दौरान योग को मानवता के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन का माध्यम बताते हुए इसे वैश्विक स्तर पर अपनाने का आह्वान किया। उनके इस प्रस्ताव को 177 देशों का अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को ''International Day of Yoga'' घोषित किया। 21 जून 2015 को विश्वभर में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन हुआ, जिसमें 190 से अधिक देशों ने सहभागिता की। यह पहल न केवल भारत की सॉफ्ट पावर का उदाहरण थी, बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् की वैश्विक स्वीकृति का भी प्रतीक बनी क्योंकि योग का संदेश है 'एकात्मता, संतुलन और सर्वांगीण कल्याण', जो इस दर्शन के मूल तत्व हैं।

भारत की G20 **अध्यक्षता–** भारत ने दिसंबर 2022 में G20 (Group of Twenty) की अध्यक्षता ग्रहण की और एक वर्ष तक इस वैश्विक मंच का नेतृत्व किया। यह भारत के लिए एक ऐतिहासिक अवसर था, जहाँ उसे वैश्विक शासन की दिशा निर्धारित करने का दायित्व प्राप्त हुआ। भारत ने इसका ध्येयवाक्य- ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य''(One Earth, One Family, One Future) घोषित किया। यह सूत्र वसुधैव कुटुम्बकम् का आधुनिक और व्यवहारिक रूप है। भारत की अध्यक्षता ने G20 को मात्र एक आर्थिक मंच से आगे बढ़ाकर एक मानवता-केंद्रित वैश्विक नीति मंच के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। भारत ने G20 के विमर्श को विकासशील देशों की प्राथमिकताओं, पर्यावरणीय संतुलन, और साझा प्रगति की दिशा में केंद्रित किया तथा संदेश दिया कि मानवता के समक्ष उपस्थित संकट केवल साझा प्रयासों से ही सुलझाए जा सकते हैं।

इस सम्मेलन में पारित ''New Delhi Leaders Declaration'' में पर्यावरण, ऊर्जा और समावेशी विकास से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रतिबद्धताएँ शामिल की गईं। जिनमें LiFE (Lifestyle for Environment) के अंतर्गत पर्यावरण-संवेदनशील जीवनशैली को बढ़ावा देना, Sustainable Energy Transition के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा सहयोग को प्रोत्साहित करना, तथा Sustainable Finance के तहत विकासशील देशों के लिए हरित वित्तपोषण सुनिश्चित करना शामिल था। इसके साथ ही Sustainable Development Goals (SDGs) की 2030 तक प्राप्ति, Plastic Pollution Mitigation के अंतर्गत प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन की वैश्विक रणनीति, और Ocean-Based Economy Protection के माध्यम से महासागरीय संसाधनों के संरक्षण की दिशा में नीतियाँ अपनाई गईं।

भारत ने इस सम्मेलन में Global Biofuel Alliance (GBA) की स्थापना कर सतत जैव ईंधनों के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देने की पहल की। साथ ही भारत ने अफ्रीकी संघ (African Union) को G20 की स्थायी सदस्यता दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाई, जिससे वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज़ को संस्थागत मान्यता मिली। समग्र रूप से, भारत की नेतृत्वकारी भूमिका ने समावेशी विकास, साझी समृद्धि और मानव-केंद्रित नीति-निर्माण की दिशा में ठोस योगदान दिया।

वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति- कोविड-19 महामारी के दौरान जब संपूर्ण विश्व स्वास्थ्य संकट से जूझ रहा था, तब भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया। भारत ने वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग और साझा उत्तरदायित्व की दिशा में एक नई मिसाल स्थापित की। वर्ष 2021 में आरंभ की गई "वैक्सीन मैत्री" पहल के तहत भारत ने 100 से अधिक देशों को लगभग 200 मिलियन वैक्सीन खुराकें भेजीं। इस दौरान भारत ने न केवल वैक्सीन आपूर्ति की, बल्कि अनेक देशों को चिकित्सकीय उपकरण, ऑक्सीजन सिलिंडर, दवाइयाँ और तकनीकी सहायता भी प्रदान की।

इसके अतिरिक्त, भारत ने कोवैक्सिन और कोविशील्ड जैसी वैक्सीनों का विकास "Make in India, Make for the World" दृष्टि के साथ किया, जिससे विकासशील देशों को सस्ती और सुलभ वैक्सीनें उपलब्ध हो सकी। भारत ने WHO और COVAX जैसी संस्थाओं के साथ सहयोग कर वैश्विक वैक्सीन वितरण को सशक्त बनाया। इन पहलों ने भारत को वैश्विक स्वास्थ्य नेतृत्व प्रदान किया, जहाँ वह एक दाता राष्ट्र नहीं, बल्कि एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में उभरा।

जलवायु एवं सतत विकास– भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को मानवीय सहयोग तक सीमित न रखते हुए उसे पर्यावरणीय संरक्षण, जलवायु न्याय और सतत विकास के क्षेत्र में भी व्यावहारिक रूप दिया। भारतीय दृष्टि में प्रकृति और मानव एक ही जीवन-स्रोत के अभिन्न अंग हैं; इसी कारण भारत ने जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाते हुए पर्यावरणीय कूटनीति को अपनी नीति का आधार बनाया। वर्ष 2015 में भारत और फ्रांस के सहयोग से स्थापित अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा बहुपक्षीय मंच है, जिसका उद्देश्य सौर ऊर्जा के प्रसार, जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता में कमी और पर्यावरणीय न्याय को सुदृढ़ करना है। इस पहल के माध्यम से भारत ने "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" की भावना को हरित ऊर्जा के रूप में मूर्त किया। इसके बाद 2019 में गठित आपदा सहनशील अवसंरचना गठबंधन (CDRI) ने प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध वैश्विक सहयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अब 30 से अधिक देशों और कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों का साझा मंच बन चुका है। यह गठबंधन मानव सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता को परस्पर पूरक मानता है। भारत का यह दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित है कि प्रकृति की सुरक्षा ही मानवता की सुरक्षा है, और इसी कारण उसकी विदेश नीति "विकास के साथ संरक्षण" को प्राथमिकता देती है। पेरिस समझौता (2015) और विभिन्न COP शिखर सम्मेलनों में भारत ने सतत विकास एवं जलवायु न्याय की वकालत की है। भारत ने जलवायु परिवर्तन को केवल वैज्ञानिक या तकनीकी नहीं, बल्कि नैतिक और मानवतावादी मुद्दा माना है, और इसी कारण ISA, CDRI तथा LiFE (Lifestyle for Environment) जैसे अभियानों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व सम्पूर्ण मानवता का साझा दायित्व है। भारत की सभ्यता का मूल भाव "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (ऋग्वेद 10.90) के सिद्धांत पर आधारित है, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" का पर्यावरणीय विस्तार है, जहाँ पृथ्वी को संसाधन नहीं, बल्कि जीवित माता के रूप में देखा जाता है।

क्षेत्रीय एवं मानवीय कूटनीति- भारत की विदेश नीति का एक प्रमुख अंग उसकी मानवीय एवं क्षेत्रीय कूटनीति है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग की परंपरा को सुदृढ़ करते हुए प्राकृतिक आपदाओं और मानवीय संकटों के समय त्वरित सहायता प्रदान कर यह सिद्ध किया है कि उसकी कूटनीति का केंद्र मानव कल्याण और करुणा है। वर्ष 2015 में नेपाल में आए भूकंप के बाद भारत ने "ऑपरेशन मैत्री" के माध्यम से राहत और बचाव कार्य संचालित किए। जिनमें राहत सामग्री, दवाइयाँ, चिकित्सा दल तथा भारतीय वायुसेना और NDRF की सक्रिय भागीदारी रही। ऑपरेशन मैत्री 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के व्यावहारिक स्वरूप का सशक्त उदाहरण है, जिसने यह सिद्ध किया कि भारत की विदेश नीति केवल रणनीतिक हितों तक सीमित नहीं, बल्कि साझा मानवता पर आधारित है।"

हाल के वर्षों में भारत ने कई निकासी अभियानों के माध्यम से अपनी मानवीय कूटनीति को और भी व्यापक बनाया। कोविड-19 महामारी के दौरान "वंदे भारत मिशन" के अंतर्गत विश्व भर में फँसे लाखों भारतीयों और विदेशी नागरिकों को "ऑपरेशन गंगा" के माध्यम से भारत ने 20,000 से अधिक भारतीय छात्रों सहित नेपाल, बांग्लादेश और अन्य देशों के नागरिकों को भी सुरक्षित निकाला। इन अभियानों ने यह स्पष्ट किया कि भारत संकट की घड़ी में किसी भी मानव को अपना मानता है। इन मानवीय प्रयासों ने भारत को एक उत्तरदायी और नैतिक वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया, जिसकी विदेश नीति प्रतिक्रिया-आधारित नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित है। भार का मूल दर्शन यह है कि मानवता, सहयोग और करुणा किसी भी स्थायी अंतरराष्ट्रीय संबंध की आधारशिला हैं, और इन्हीं मूल्यों पर भारत ने वैश्विक समुदाय में एकता और सह-अस्तित्व का सशक्त संदेश दिया है। भारत की क्षेत्रीय और मानवीय कूटनीति "वसुधैव कुटुम्बकम्" की उस मानवीय संवेदना को साकार करती है जिसमें सीमाएँ, राष्ट्रीयताएँ और हित गौण हो जाते हैं, और मानव जीवन की रक्षा सर्वोच्च मूल्य बन जाती है।

5. निष्कर्ष : 2014 के पश्चात भारत की विदेश नीति में उल्लेखनीय परिवर्तन केवल रणनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि दार्शनिक और सभ्यतागत स्तर पर भी दिखाई देता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा अब भारत की कूटनीतिक दृष्टि का व्यावहारिक आधार बन चुकी है। वैक्सीन मैत्री, ऑपरेशन गंगा, ऑपरेशन मैत्री, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस तथा अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, जैसी पहलों ने यह सिद्ध किया है कि भारत की विदेश नीति शक्ति-प्रदर्शन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, सहयोग और वैश्विक उत्तरदायित्व पर आधारित है। भारत ने यह दिखाया है कि आधुनिक विदेश नीति में राष्ट्रीय हित और वैश्विक कल्याण एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इस प्रकार "वसुधैव कुटुम्बकम्" अब केवल सांस्कृतिक आदर्श नहीं, बल्कि भारत की विदेश नीति का जीवंत, व्यवहारिक और सार्वभौमिक कूटनीतिक दर्शन बन चुका है। आज का विश्व महामारी, यूक्रेन युद्ध, आर्थिक मंदी, आपूर्ति श्रृंखला की अस्थिरता, ऊर्जा संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है। इन जटिल परिस्थितियों में भारत का यह प्राचीन दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् संपूर्ण मानवता के समग्र कल्याण के लिए एक आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक समाधान प्रदान करता है। यह विचार विशेष रूप से विकासशील देशों की आवश्यकताओं, न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था और साझा उत्तरदायित्व की भावना को केंद्र में रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मांगलिक, रोहित, भारत का इतिहास-प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी .ई तक, एदुगोरिल्ला पब्लिकेशन, लखनऊ, 2024, पृष्ठ (18)
2. लक्ष्मण शास्त्री, वासुदेव, लघुयोगवसिष्ठ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली,1985,पृष्ठ (383)
3. सिन्हा ए. इंडिया कैन लीड G20 ऐज़ अ मूवमेंट फ़ॉर वसुधैव कुटुम्बकम. द इकोनॉमिक टाइम्स. नवम्बर 2022.
4. पांडे, एस. वसुधैव कुटुम्बकम: अ ग्लोबल विज़न रूटेड इन इंडियन कल्चर, धर्मार्थ प्रकाशन, वाराणसी, 2010, पृष्ठ (41)
5. शर्मा, आर. इंटेग्रल ह्यूमनिज़्म: दीनदयाल उपाध्यायाज़ विज़न एंड फ़िलॉसफ़ी, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, न्यू दिल्ली, 2011, पृष्ठ (36-37)
6. यूनाइटेड नेशंस. ऐड्रेस बाय प्राइम मिनिस्टर नरेंद्र मोदी टू द UN जनरल असेंबली (74th सेशन).2019 Available at: https://gadebate.un.org/en/74/india
7. यूनाइटेड नेशन्स जनरल असेंबली. रिज़ोल्यूशन एडॉप्टेड बाय द जनरल असेंबली ऑन 11 दिसम्बर 2014: इंटरनेशनल डे ऑफ योगा (A/RES/69/131). 2014
Available at:: https://www.un.org/en/observances/yoga-day
8. रैना, एस. के. वसुधैव कुटुम्बकम — वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर. जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर, 12(2), 2023,पृष्ठ (387–389) Available at::https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC10114570
9. बेहरा, एन. के., एंड साहू, पी. इंडियाज़ जी20 प्रेसिडेंसी इन शेपिंग द ग्लोबल गवर्नेंस. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 7(1), 2023,पृष्ठ (231–239)
10. दहिया, पी. वी., एंड कुमार, पी. फिलॉसॉफिकल एंड कल्चरल फाउंडेशन्स ऑफ भारत ओवर्सीज पॉलिसी: *वसुधैव कुटुम्बकम.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च, 10(3), 2024, पृष्ठ (10–15)
11. यादव, शरद कुमार, वसुधैव कुटुम्बकम्: पर्यावरणीय संधारणीयता की भारतीय अंतदृष्टी, सीएसआईआर-निस्पर, अंक(1), 2024, पृष्ठ (32-36)
12. पाण्डेय ,हेमंत कुमार, सिंह,मनीष राज, इंडिया मेजर मिलिट्री एंड रेस्क्यू ऑपरेशन, होराइजन बुक्स नई दिल्ली, 2021,पृष्ठ (294)